श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति, राजस्थान का उद्‌बोधन

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर द्वारा आयोजित वेबिनार

दिनांक 22 जून, 2020 **समय दोपहर : 12.00 बजे**

स्थान : राजभवन, जयपुर

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर को विश्व बैंक और भारत सरकार के सौजन्य से स्वीकृत राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के ऑनलाइन उद्घाटन समारोह में उपस्थित डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग, भारत सरकार एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, डॉ. राकेश चन्द्र अग्रवाल, उप महानिदेशक, कृषि शिक्षा, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् एवं राष्ट्रीय निदेशक, राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना, नई दिल्ली, डॉ. जीत सिंह सन्धू, कुलपति, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, डॉ. एन. एस. राठौड़, कुलपति, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर डॉ. डी. सी. जोशी, कुलपति, कृषि विश्वविद्यालय, कोटा डॉ. आर. पी. सिंह, कुलपति, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर, डॉ. बी. आर. चौधरी, कुलपति, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर, डॉ. विष्णु शर्मा, कुलपति, राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर, डॉ. ए. के. गुप्ता, परियोजना अधिकारी, राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना एवं अधिष्ठाता, निदेशक, अधिष्ठातागण, आचार्यगण, अधिकारीगण, अभिभावकगण छात्र–छात्राओ, भाइयो और बहिनो

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि मात्र सात वर्ष पूर्व स्थापित विश्वविद्यालय को उसके शैक्षणिक वातावरण में उत्कृष्टता सुनिश्चित करने के लिये इस प्रतिष्ठित परियोजना के लिये चयनित किया गया। यह विश्वविद्यालय द्वारा किये जा रहे विकास कार्यों में प्रगति का द्योतक है। इसके लिये मैं प्रोफेसर सन्धू और उनकी टीम को साधुवाद देता हूं।

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना एक नये कृषि विश्वविद्यालय के रूप में 13 सितम्बर, 2013 को हुई। विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य कृषि विज्ञान में शिक्षा, शोध एवं प्रसार कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान केन्द्रित करना है। इस विश्वविद्यालय का क्षेत्राधिकार आठ जिलों (सीकर, जयपुर, अजमेर, टोंक, दौसा, अलवर, भरतपुर एवं धौलपुर) में फैला हुआ है। इसके सेवा क्षेत्र का विस्तार तीन जलवायु खण्ड़ों में राज्य के 16 प्रतिशत भौगोलिक हिस्से में जो कि अर्द्धशुष्क है, में फैला हुआ है।

विश्वविद्यालय का मूलभूत उद्देश्य कृषि एवं सहबद्ध विज्ञान में अनुसंधान एवं विद्या का अभिवर्धन व राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए कृषि तकनीक का विकास तथा प्रसार करना है।

इस विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने चना, गेंहूं, जौ, दलहन, सरसों, मूंगफली, बाजरा, ग्वार, बीजीय मसाला फसलों, इत्यादि की विशेषतः अर्द्धशुष्क क्षेत्रों के लिये करीब **125** उन्नत किस्में विकसित की हैं। ये उन्नत किस्में न केवल राजस्थान राज्य के कुल उत्पादन में अभिवृद्धि के लिए वरदान साबित हुई हैं अपितु पडौसी प्रदेशों में भी लोकप्रिय हुई हैं। साथ ही साथ कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने विभिन्न आधुनिक कृषि तकनीकी विकसित की है, जिन्हें कृषि विभाग एवं प्रसार विशेषज्ञों द्वारा किसानों तक पहुंचाया जा रहा हैं।

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशालय के अन्तर्गत 16 अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाएं चल रही हैं। इन परियोजनाओं के अन्तर्गत किये गये अनुसंधान को राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया है। चार फसलों बाजरा, चना, बीजीय मसाला और तारामीरा पर किये गये अनुसंधान को तो भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा उत्कृष्टता पुरस्कार भी दिये गये हैं। विश्वविद्यालय में भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित 29 राष्ट्रीय कृषि विकास योजनाओं के द्वारा विश्वविद्यालय के आधारभूत एवं संरचनात्मक विकास में काफी मदद मिली है।

प्रदेश में वर्षा जल की अत्यन्त कमी है। जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणामों की वजह से वर्षा तंत्र गड़बड़ा गया है। कहीं भारी वर्षा तो कहीं अत्यन्त अल्प वर्षा हो रही है व वर्षा का वितरण भी समान नहीं हो रहा है। कृषि में जल की उपयोगिता को देखते हुए इस विश्वविद्यालय द्वारा वर्षा जल संग्रहण पर वृहत स्तर पर कार्य किया जा रहा है।

मेरी पिछली विजिट में मैंने देखा कि विश्वविद्यालय ने विभिन्न फार्म पॉन्डों की मदद से पांच करोड़ लीटर वर्षा जल संग्रहण की संरचना विकसित की है, जो विश्वविद्यालय के प्रयोगों व बीज उत्पादन में महती भूमिका निभा रहा है। इस अभिनव प्रयत्न से आसपास के किसानों के कुओं का जल काफी ऊँचा हो गया है, जिससे सिंचाई करना संभव हो गया है। वर्षा संग्रहित जल का उपयोग दाबित सिंचाई (Pressurized irrigation) के माध्यम से ही लिया जा रहा है, ताकि जल की प्रति बूंद से अधिक पैदावार (Per drop more crop) ली जा सके।

विश्वविद्यालय में हो रहे शोध कार्यों को विषय के हाई रैंकिंग जर्नल्स में स्थान मिल रहा है। यह विश्वविद्यालय कृषि शिक्षा में भी अग्रणी रहा है। यहां के कृषि स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थी देश–विदेश में महत्वपूर्ण पदों पर सेवाएं दे रहे हैं।

कृषि क्षेत्र के कई मूर्धन्य विद्वानों जैसे डॉ. राज परोदा, डॉ. अमर सिंह फडोदा, डॉ. ए. एम. माइकेल, डॉ. प्रेमनाथ, डॉ. शब्द स्वरूप आचार्य, डॉ. के. के. एस. चौहान, डॉ. झा, ने जोबनेर को अपनी कर्मस्थली बनाया। यहां से उत्तीर्ण विद्यार्थी भारतीय प्रशासनिक, पुलिस, आयकर, कस्टम जैसी सेवाओं में अपना परचम फहरा रहे हैं। राज्य कृषि सेवा में तो लगभग 50 प्रतिशत अधिकारी यहां से पढ़े हुए मिलेंगे। बहुत से छात्र–छात्रायें वैज्ञानिक बनकर उदित और स्थापित हुए हैं।

यहां की गुरूकुल समान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षण, प्रशिक्षण पाकर विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाली एन.ई.टी. (NET), एस. आर. एफ. (SRF) एवं जे. आर. एफ. (JRF) जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होकर वरीयता सूची में दर्जनों की संख्या में नाम दर्ज करवाया है। मैं आप सभी को बधाई देता हूँ।

कोरोना वैश्विक महामारी के संकट में भी यहां ऑनलाइन अध्यापन करवाकर पाठ्यक्रम पूर्ण करवाया है। अभिनव प्रयास भी यहां किये जा रहे हैं। अग्रणी विश्वविद्यालयों से अनुबंध करके ड्यूल डिग्री प्रोग्राम सराहनीय है।

विश्वविद्यालय अपने सात कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से कृषि के क्षेत्र में हो रहे नवाचारों को किसानों तक पहुंचा रहा हैं। गर्व की बात यह है कि विश्वविद्यालय से जुड़े हुए किसानों की न केवल आमद में बढ़ोतरी हो रही है बल्कि उनमें से अनेकों को प्रदेश स्तर पर और श्री सुण्ड़ा राम वर्मा (दांतारामगढ़) एवं श्री जगदीश प्रसाद पारीक (अजीतगढ़) को पद्मश्री पुरस्कार से भी अलंकृत किया गया है। मेरी पिछली विजिट के दौरान विश्वविद्यालय ने अपने सेवा क्षेत्र के विभिन्न जिलों से चयनित प्रगतिशील किसानों को प्रशस्ति–पत्र दिलवाकर प्रोत्साहित किया था।

विश्वविद्यालय ने अन्त्योदय योजना के अन्तर्गत चयनित दूसरे गांव के सर्वांगीण विकास का दायित्व लेकर सभी विभागों से विकास के लिये अपने प्रयास पचार गांव पर भी फोकस किया है।

विश्वविद्यालय ने प्रगति हेतु कई सकारात्मक एवं सार्थक कदम उठाये हैं। इनमें से एक प्रयास विश्वविद्यालय की आय के सुदृढ़ीकरण का है। इस दिशा में सौर आधारित विद्युत उत्पन्न करके खर्चों में बचत भी की है। विश्वविद्यालय के सीमित संसाधनों का संरक्षण किया जाना सराहनीय है।

विश्वविद्यालय के अधीन सभी फार्मों की अधिकाधिक जमीन बोवाई हेतु प्रयुक्त की जाये। सब्जियों व अधिक मूल्य वाली फसलों के बीज उत्पादन करके आय बढाई जाये। बंजड़ व कम उपजाऊ जमीन पर स्टाफ व विद्यार्थियों द्वारा वृहत वृक्षारोपण किया जाये।

मुझे अवगत करवाया गया है कि आगामी दो वर्षों में विश्वविद्यालय की वर्तमान आय को चार से आठ करोड़ करके दोगुना करने के लक्ष्य निर्धारित करना भी अच्छे प्रयास हैं। छात्रावासों के अपशिष्ट जल को उपचारित करके सिंचाई में उपयोग लेने जैसी योजनाओं से पर्यावरण स्वच्छ होगा साथ ही निरंतर हो रहे जल संकट से भी राहत मिलेगी।

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय में हाल ही में ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों के कौशल विकास हेतु कॅरियर डवलपमेंट केन्द्र शुरू किया गया है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा प्रदत्त इस केन्द्र में ग्रामीण शिक्षित प्रतिभाओं को अंग्रेजी दक्षता के साथ कॅरियर बनाने का भी सुनहरा अवसर मिलेगा। साथ ही व्यक्तित्व विकास, संचार क्षमता, समय प्रबंधन, भाषा दक्षता का विकास होगा। जिससे देश–विदेश की सर्वोपरि कंपनियों में नौकरी पाने का अवसर भी मिलेगा।

इस अवसर पर मैं डॉ. महापात्र को भी बधाई देना चाहता हूं, जिन्होंने विषम परिस्थितियों के बावजूद भारतीय कृषि को शिक्षा, अनुसंधान व प्रसार में नये आयाम दिये हैं। इस विश्वविद्यालय को विश्व बैंक व भारत सरकार वित्त पोषित राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना से 23.88 करोड रूपये की परियोजना स्वीकृत हुई है। इस परियोजना के द्वारा कृषि स्नातकों में दक्षता विकास करके विश्वस्तरीय प्रतिस्पर्धा हेतु तैयार किया जायेगा। उन्हें अपने ही महाविद्यालय में भाषाई प्रवीणता, व्यक्तित्व विकास, सॉफ्ट स्किल्स व कौशल विकास के अवसर सुलभ होंगे।

कृषि स्नातक विद्यार्थियों को देश एवं विदेश की प्रमुख प्रयोगशालाओं में अनुसंधान करने का मौका मिलेगा। इस परियोजना के द्वारा दो कृषि महाविद्यालयों को उत्कृष्ट बनाने में मदद मिलेगी। इस अवसर पर मैं इस परियोजना के सफल संचालन एवं लक्ष्य प्राप्ति की शुभकामना प्रेषित करता हूँ।

धन्यवाद। जय हिन्द।